ॐ गं गणपतये नमः

शुभ 卐 लाभ

जन्मपत्रिका

Sample

Created By: www.futurepointindia.com

Model: T-PageTitle,C1,P2P3

Order No: 101-102-101-1001/112920

Future Point (P) Ltd.

D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016

Ph.: 011-40541000, 40541020

Email: mail@futurepointindia.com

Model: T-PageTitle.C1.P2P3

Order No: 112920 Date: 03/09/2012

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**01/01/2012**
दिन	रविवार
जन्म समय	**23:10:00 घंटे**
इष्ट	39:46:25 घटी
स्थान	
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उ	चैत्रादि संवत्-शक संवत	2068 / 1933
रेखांश	77:13:00 पू	माह	पौष
मध्य रेखांश	82:30:00 पू	पक्ष	शुक्ल
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे	सूर्योदय कालीन तिथि	8
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे	तिथि समाप्ति काल	24:58:29
वेलान्तर	-00:03:13 घंटे	जन्म तिथि	8
साम्पातिक काल	05:32:00 घंटे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	उत्तराभाद्रपद
सूर्योदय	07:15:25 घंटे	नक्षत्र समाप्ति काल	12:41:36 घंटे
सूर्यास्त	17:33:35 घंटे	जन्म नक्षत्र	रेवती
दिनमान	10:18:10 घंटे	सूर्योदय कालीन योग	वरियान
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण	योग समाप्ति काल	07:19:23 घंटे
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण	जन्म योग	परिघ
ऋतु	शिशिर	सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
सूर्य के अंश	16:40:45 धनु	करण समाप्ति काल	11:44:34 घंटे
लग्न के अंश	29:48:36 सिंह	जन्म करण	बव
भोग्य दशा काल	बुध 10 वर्ष 4 मा 15 दि		

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	परिघ
करण	बव
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मक

घात चक्र

मास	फाल्गुन
तिथि	5-10-15
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	वज्र
करण	चतुष्पाद
प्रहर	4
वर्ग	गरूड़
लग्न	सिंह
सूर्य	मिथुन
चन्द्र	कुम्भ
मंगल	कर्क
बुध	कुम्भ
गुरु	सिंह
शुक्र	कन्या
शनि	वृष
राहु	तुला

Sample

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामीअं.		स्थिति	गति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		29:48:36	सिंह	उफा	1	सूर्य	राहु	--	00:00:00	0:00			
सूर्य		16:40:45	धनु	पूषा	2	शुक्र	चंद्र	मित्र	01:01:09	0.95	पितृ	पुत्र	विपत
चंद्र		21:51:40	मीन	रेव	2	बुध	सूर्य	सम	11:52:46	1.03	मातृ	भ्रातृ	जन्म
मंग		26:15:35	सिंह	पूफा	4	शुक्र	केतु	मित्र	00:14:08	1.38	भ्रातृ	अमात्य	विपत
बुध		26:47:40	वृश्चि	ज्ये	4	बुध	गुरु	सम	01:21:07	1.02	ज्ञाति	आत्मा	जन्म
गुरु		06:24:58	मेष	अश्वि	2	केतु	राहु	मित्र	00:01:25	0.86	धन	ज्ञाति	सम्पत
शुक्र		20:41:47	मक	श्रव	4	चंद्र	शुक्र	मित्र	01:13:36	1.53	कलत्र	मातृ	प्रत्यारि
शनि		04:18:21	तुला	चित्र	4	मंग	शुक्र	उच्च	00:03:42	1.24	आयु	कलत्र	साधक
राहु		19:56:38	वृश्चि	ज्ये	1	बुध	शुक्र	शत्रु	00:00:51		ज्ञान	---	जन्म
केतु		19:56:38	वृष	रोहि	3	चंद्र	केतु	सम	00:00:51		मोक्ष	---	प्रत्यारि

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:46

लग्न-चलित

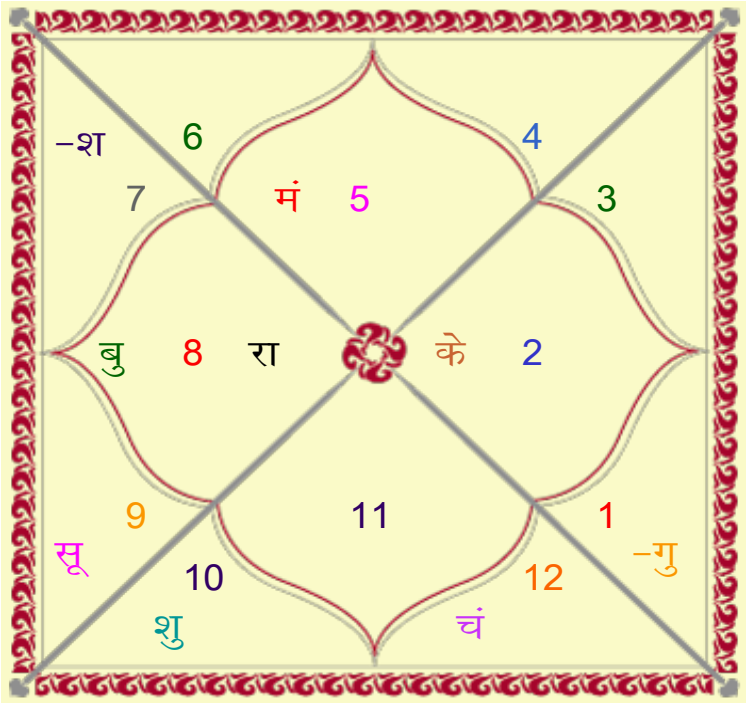

चन्द्र कुंडली

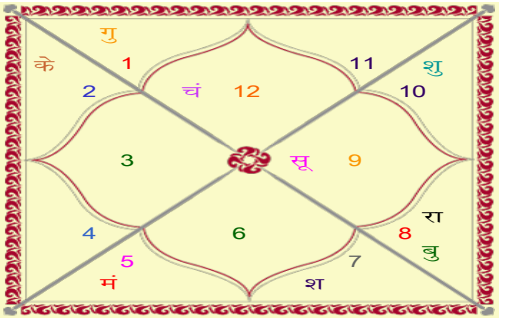

नवमांश कुंडली

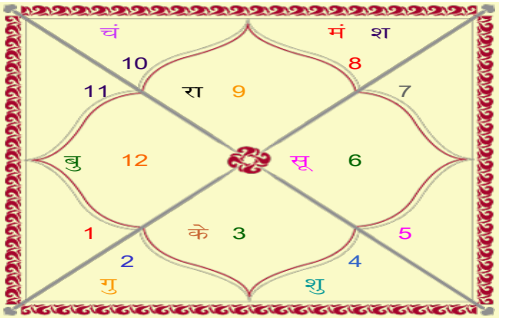

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	14:46:00	सिंह	29:48:36
2	कन्या	14:46:00	कन्या	29:43:23
3	तुला	14:40:47	तुला	29:38:11
4	वृश्चिक	14:35:34	वृश्चिक	29:32:58
5	धनु	14:35:34	धनु	29:38:11
6	मकर	14:40:47	मकर	29:43:23
7	कुम्भ	14:46:00	कुम्भ	29:48:36
8	मीन	14:46:00	मीन	29:43:23
9	मेष	14:40:47	मेष	29:38:11
10	वृष	14:35:34	वृष	29:32:58
11	मिथुन	14:35:34	मिथुन	29:38:11
12	कर्क	14:40:47	कर्क	29:43:23

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	29:48:36
2	कन्या	27:31:27
3	तुला	27:55:59
4	वृश्चिक	29:32:58
5	मकर	01:05:18
6	कुम्भ	01:32:36
7	कुम्भ	29:48:36
8	मीन	27:31:27
9	मेष	27:55:59
10	वृष	29:32:58
11	कर्क	01:05:18
12	सिंह	01:32:36

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुर्नहस्त		चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रप

चलित कुंडली

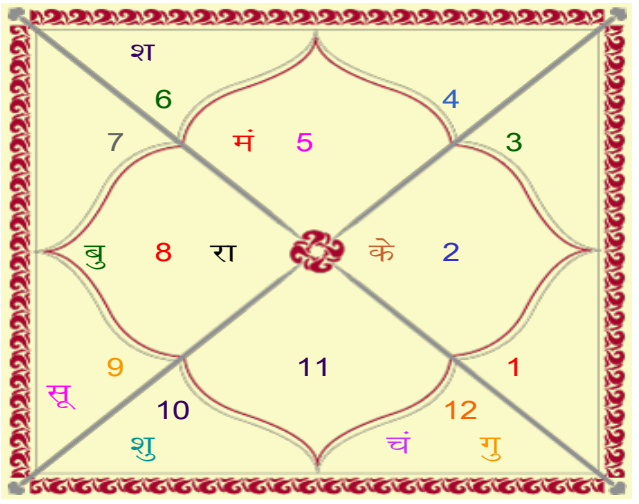

भाव कुंडली

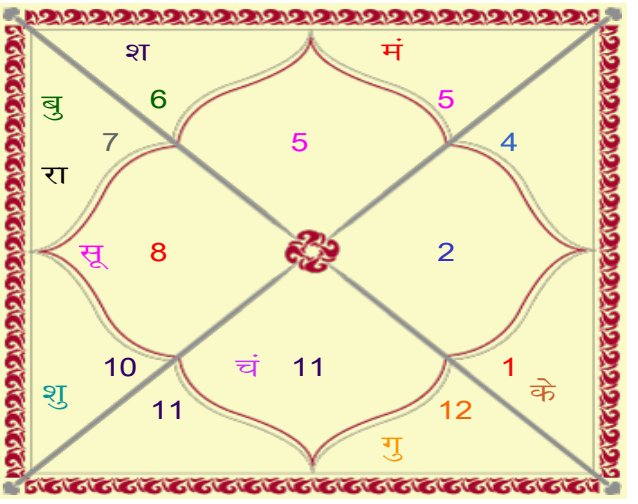

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------		रश्मि	ग्रह
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा	मुदित	कौतुक	3.70	49 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	कुमार	निपीदित	गमन	8.33	44 %
मंग	अमात्य	भ्रातृ	मृत	मुदित	कौतुक	0.78	35 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	शक्त	कौतुक	3.61	35 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	मुदित	भोजन	3.56	40 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	कुमार	मुदित	कौतुक	6.74	66 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	दीप्त	नेत्रपाणि	13.69	52 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	कौतुक	0.00	64 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	निपीदित	कौतुक	0.00	64 %
कुल						40.41	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुर्नहस्त		चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रप

चलित कुंडली

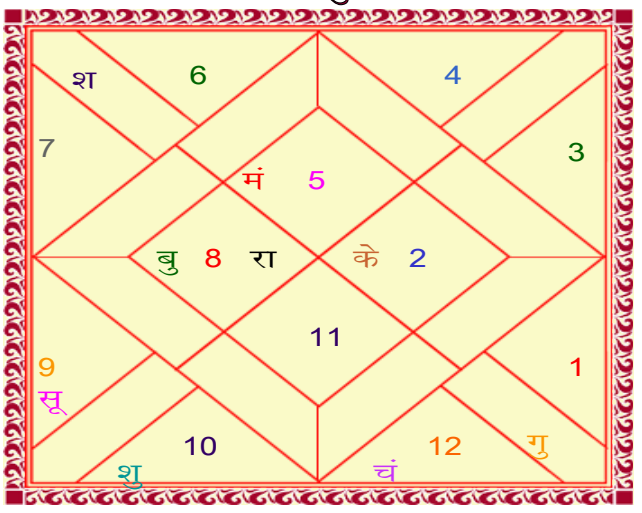

लग्न-चलित

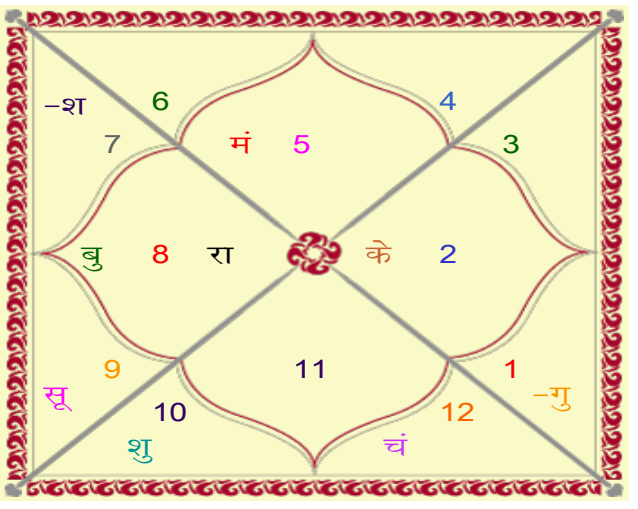

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 4 मास 15 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	16:40:45	गु	शु	चं	गु
चंद्र		मीन	21:51:40	गु	बु	सू	गु
मंग		सिंह	26:15:35	सू	शु	के	रा
बुध		वृश्चि	26:47:40	मं	बु	गु	बु
गुरु		मेष	06:24:58	मं	के	रा	श
शुक्र		मक	20:41:47	श	चं	शु	शु
शनि		तुला	04:18:21	शु	मं	शु	श
राहु		वृश्चि	19:56:38	मं	बु	शु	चं
केतु		वृष	19:56:38	शु	चं	के	चं
हर्ष		मीन	06:49:41	गु	श	बु	गु
नेप		कुंभ	04:52:47	श	मं	शु	के
प्लू		धनु	13:19:13	गु	के	बु	श

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	29:48:36	सू	सू	रा	श
2	कंया	27:31:27	बु	मं	गु	मं
3	तुला	27:55:59	शु	गु	शु	गु
4	वृश्चि	29:32:58	मं	बु	श	रा
5	मक	01:05:18	श	सू	रा	चं
6	कुंभ	01:32:36	श	मं	बु	गु
7	कुंभ	29:48:36	श	गु	चं	गु
8	मीन	27:31:27	गु	बु	गु	मं
9	मेष	27:55:59	मं	सू	चं	श
10	वृष	29:32:58	शु	मं	श	रा
11	कर्क	01:05:18	चं	गु	मं	के
12	सिंह	01:32:36	सू	के	शु	मं

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:46

लग्न कुंडली

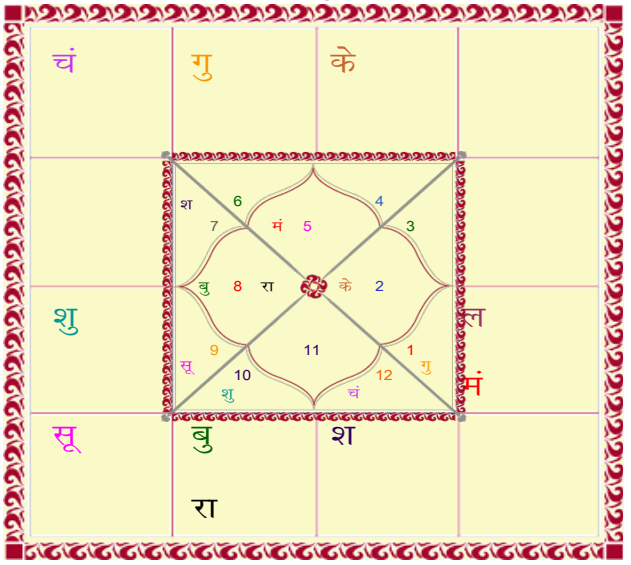

भाव कुंडली

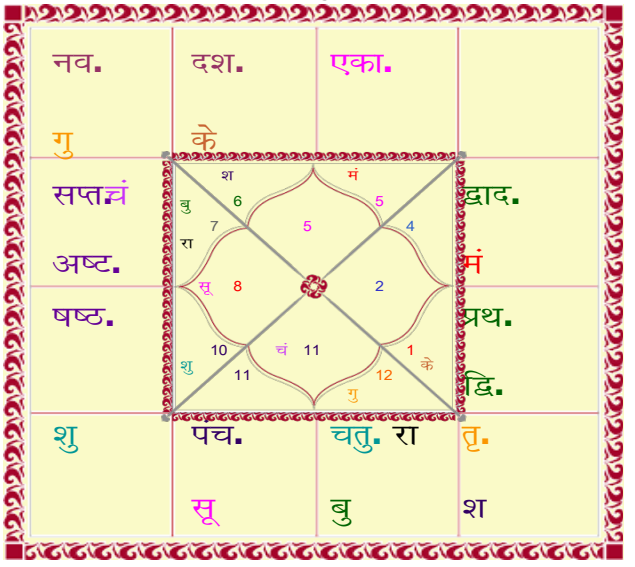

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह					
1	सू–					
2	चं–	बु	श	रा–		
3	सू–	चं	मं–	बु+	शु–	रा+
4	सू	मं–	श–			
5	सू	मं	शु	श–		
6	श–					
7	चं	शु	श–	के		
8	गु					
9	मं–	गु	श–	के		
10	सू–	मं–	शु–			
11	चं–	शु–	के–			
12	सू–	मं	श			

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव						
सू	1–	3–	4	5	10–	12–	
चं	2–	3	7	11–			
मं	3–	4–	5	9–	10–	12	
बु	2	3+					
गु	8	9					
शु	3–	5	7	10–	11–		
श	2	4–	5–	6–	7–	9–	12
रा	2–	3+					
के	7	9	11–				

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

Sample

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	धनु	मीन	सिंह	वृश्चि	मेष	मक	तुला	वृश्चि	वृष
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मेष	मेष	वृश्चि	मेष	कर्क	मेष	कंया	तुला	मीन	कंया
चतुर्थांश	वृष	मिथु	कंया	वृष	सिंह	मेष	कर्क	तुला	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	कुंभ	मीन	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	वृष	वृश्चि	वृश्चि	कंया	मीन
नवमांश	धनु	कंया	मक	वृश्चि	मीन	वृष	कर्क	वृश्चि	धनु	मिथु
दशमांश	वृष	वृष	मिथु	मेष	मीन	मिथु	मीन	वृश्चि	मक	कर्क
द्वादशांश	कर्क	मिथु	वृश्चि	मिथु	कंया	मिथु	कंया	वृश्चि	मिथु	धनु
षोडशांश	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	तुला	तुला	कर्क	मीन	मिथु	मिथु	मिथु
विंशांश	कर्क	कर्क	तुला	वृष	वृष	सिंह	वृष	मिथु	मक	मक
चतुर्विंशांश	कर्क	कंया	धनु	वृष	मेष	मक	वृश्चि	वृश्चि	तुला	तुला
सप्तविंशांश	मिथु	कर्क	सिंह	मीन	मक	कंया	मक	मक	मिथु	धनु
त्रिंशांश	तुला	धनु	मक	तुला	वृश्चि	कुंभ	मक	मेष	मीन	मीन
खवेदांश	कर्क	कुंभ	मीन	मीन	कंया	धनु	मक	कंया	धनु	धनु
अक्षवेदांश	मेष	मक	सिंह	वृश्चि	धनु	मक	वृश्चि	तुला	मक	मक
षष्ट्यंश	कर्क	कंया	तुला	धनु	मेष	मेष	मिथु	मिथु	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	---	---	पारिजात	भेदक
चन्द्र	---	---	---	---
मंगल	किंसुक	किंसुक	उत्तम	नागपुष्प
बुध	---	---	---	भेदक
गुरु	---	---	---	भेदक
शुक्र	---	---	पारिजात	कुसुम
शनि	किंसुक	किंसुक	पारिजात	कन्दुक
राहु	---	किंसुक	उत्तम	नागपुष्प
केतु	किंसुक	व्यंजन	उत्तम	कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.55	10.50	14.35	11.80	9.35	15.20	14.00	8.20	8.90
सप्तवर्ग	12.43	10.10	14.23	12.50	9.35	14.03	13.20	8.05	9.75
दशवर्ग	13.35	11.25	12.18	13.88	9.63	15.53	14.40	11.25	8.83
षोडशवर्ग	13.93	11.85	11.95	13.75	10.38	15.05	15.25	11.25	8.55

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	22	46	9	36	30	38	55
सप्तवर्गज बल	83	56	101	103	43	109	83
ओजयुग्मक बल	15	30	15	0	15	30	15
केन्द्र बल	30	30	60	60	15	15	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	15	0
कुल स्थान बल	150	178	186	199	119	207	167
कुल दिग्बल	6	23	31	31	12	43	11
नतोन्नत बल	6	54	54	60	6	6	54
पक्ष बल	28	63	28	32	32	32	28
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	1	22	35	60	45	9	44
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	81	139	117	151	158	197	126
कुल चेष्टाबल	0	0	44	22	38	23	27
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	−12	−19	20	−2	−24	−6	31
कुल षट्बल	284	372	415	427	337	506	371
रूप षट्बल	4.7	6.2	6.9	7.1	5.6	8.4	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	0.9	1.0	1.4	1.0	0.9	1.5	1.2
संबंधित पद	6	4	2	5	7	1	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	8.91	38.32	20.25	28.34	34.08	29.52	38.17
कष्ट फल	46.17	19.69	28.86	30.05	25.43	28.60	13.22

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	284	427	506	415	337	371	371	337	415	506	427	372
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	58	64	57	22	25	10	22	−4	−6	63	79	60
कुल भाव बल	372	542	603	467	371	421	393	353	459	629	546	451
रूप भाव बल	6.2	9.0	10.0	7.8	6.2	7.0	6.5	5.9	7.6	10.5	9.1	7.5
संबंधित पद	10	4	2	5	11	8	9	12	6	1	3	7

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	3	6	3	2	6	4	5	3	4	6	4	3	49
सूर्य	3	4	5	5	6	4	4	3	4	5	2	3	48
चंद्र	3	6	4	3	3	5	5	3	3	5	4	5	49
मंग	3	5	4	1	5	4	3	2	1	5	3	3	39
बुध	6	5	4	2	7	5	4	7	1	5	3	5	54
गुरु	4	4	5	4	4	7	3	6	4	4	7	4	56
शुक्र	5	3	4	5	4	3	5	5	4	6	4	4	52
शनि	1	3	5	3	5	3	4	2	4	4	2	3	39
बि	28	36	34	25	40	35	33	31	25	40	29	30	386
रे	36	28	30	39	24	29	31	33	39	24	35	34	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	2	0	0	3	0	2	1	1	2	1	1	13
सूर्य	0	0	3	2	3	0	2	0	1	1	0	0	12
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	2	4
मंग	2	1	1	0	4	0	0	1	0	1	0	2	12
बुध	5	0	1	0	6	0	1	5	0	0	0	3	21
गुरु	0	0	2	0	0	3	0	2	0	0	4	0	11
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	3	0	0	7
शनि	0	0	3	1	4	0	2	0	3	1	0	1	15
रे	8	4	10	4	20	3	9	10	5	8	5	9	95

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	0	0	3	0	2	1	1	2	0	1	10
सूर्य	0	0	3	2	3	0	2	0	1	1	0	0	12
चंद्र	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	2	3
मंग	2	1	1	0	4	0	0	1	0	1	0	2	12
बुध	5	0	1	0	6	0	1	5	0	0	0	3	21
गुरु	0	0	2	0	0	2	0	2	0	0	4	0	10
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	3	0	0	7
शनि	0	0	3	1	4	0	2	0	3	1	0	1	15
रे	8	1	10	4	20	2	9	10	5	8	4	9	90

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	83	90	31	109	186	86	41	126
ग्रह पिंड	63	46	15	74	143	10	41	69
शोध्य पिंड	146	136	46	183	329	96	82	195

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 4 मास 15 दिन

बुध		केतु		शुक्र		सूर्य	
01/01/2012		19/05/2022		18/05/2029		18/05/2049	
19/05/2022		18/05/2029		18/05/2049		19/05/2055	
बुध	00/00/0000	केतु	15/10/2022	शुक्र	17/09/2032	सूर्य	05/09/2049
केतु	00/00/0000	शुक्र	15/12/2023	सूर्य	17/09/2033	चंद्र	07/03/2050
शुक्र	01/01/2012	सूर्य	21/04/2024	चंद्र	19/05/2035	मंग	12/07/2050
सूर्य	18/06/2012	चंद्र	20/11/2024	मंग	18/07/2036	राहु	06/06/2051
चंद्र	17/11/2013	मंग	18/04/2025	राहु	19/07/2039	गुरु	24/03/2052
मंग	14/11/2014	राहु	06/05/2026	गुरु	19/03/2042	शनि	06/03/2053
राहु	03/06/2017	गुरु	12/04/2027	शनि	18/05/2045	बुध	11/01/2054
गुरु	09/09/2019	शनि	21/05/2028	बुध	18/03/2048	केतु	19/05/2054
शनि	19/05/2022	बुध	18/05/2029	केतु	18/05/2049	शुक्र	19/05/2055

चंद्र		मंग		राहु		गुरु	
19/05/2055		18/05/2065		18/05/2072		19/05/2090	
18/05/2065		18/05/2072		19/05/2090		20/05/2106	
चंद्र	18/03/2056	मंग	15/10/2065	राहु	29/01/2075	गुरु	06/07/2092
मंग	17/10/2056	राहु	02/11/2066	गुरु	24/06/2077	शनि	17/01/2095
राहु	18/04/2058	गुरु	09/10/2067	शनि	30/04/2080	बुध	24/04/2097
गुरु	18/08/2059	शनि	17/11/2068	बुध	17/11/2082	केतु	31/03/2098
शनि	19/03/2061	बुध	14/11/2069	केतु	06/12/2083	शुक्र	30/11/2100
बुध	18/08/2062	केतु	12/04/2070	शुक्र	06/12/2086	सूर्य	18/09/2101
केतु	19/03/2063	शुक्र	12/06/2071	सूर्य	30/10/2087	चंद्र	18/01/2103
शुक्र	17/11/2064	सूर्य	18/10/2071	चंद्र	30/04/2089	मंग	25/12/2103
सूर्य	18/05/2065	चंद्र	18/05/2072	मंग	19/05/2090	राहु	20/05/2106

शनि		बुध	
20/05/2106		19/05/2125	
19/05/2125		00/00/0000	
शनि	22/05/2109	बुध	16/10/2127
बुध	31/01/2112	केतु	12/10/2128
केतु	10/03/2113	शुक्र	13/08/2131
शुक्र	10/05/2116	सूर्य	02/01/2132
सूर्य	22/04/2117	चंद्र	00/00/0000
चंद्र	21/11/2118	मंग	00/00/0000
मंग	31/12/2119	राहु	00/00/0000
राहु	06/11/2122	गुरु	00/00/0000
गुरु	19/05/2125	शनि	00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 4 मा 15 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

बुध-सूर्य
01/01/2012
18/06/2012

सूर्य	00/00/0000
चंद्र	00/00/0000
मंग	00/00/0000
राहु	01/01/2012
गुरु	07/01/2012
शनि	25/02/2012
बुध	09/04/2012
केतु	27/04/2012
शुक्र	18/06/2012

बुध-चंद्र
18/06/2012
17/11/2013

चंद्र	31/07/2012
मंग	30/08/2012
राहु	16/11/2012
गुरु	23/01/2013
शनि	15/04/2013
बुध	28/06/2013
केतु	28/07/2013
शुक्र	22/10/2013
सूर्य	17/11/2013

बुध-मंग
17/11/2013
14/11/2014

मंग	08/12/2013
राहु	31/01/2014
गुरु	21/03/2014
शनि	17/05/2014
बुध	07/07/2014
केतु	29/07/2014
शुक्र	27/09/2014
सूर्य	15/10/2014
चंद्र	14/11/2014

बुध-राहु
14/11/2014
03/06/2017

राहु	03/04/2015
गुरु	05/08/2015
शनि	31/12/2015
बुध	11/05/2016
केतु	04/07/2016
शुक्र	06/12/2016
सूर्य	22/01/2017
चंद्र	09/04/2017
मंग	03/06/2017

बुध-गुरु
03/06/2017
09/09/2019

गुरु	21/09/2017
शनि	30/01/2018
बुध	27/05/2018
केतु	15/07/2018
शुक्र	30/11/2018
सूर्य	10/01/2019
चंद्र	20/03/2019
मंग	07/05/2019
राहु	09/09/2019

बुध-शनि
09/09/2019
19/05/2022

शनि	11/02/2020
बुध	29/06/2020
केतु	26/08/2020
शुक्र	06/02/2021
सूर्य	27/03/2021
चंद्र	17/06/2021
मंग	13/08/2021
राहु	08/01/2022
गुरु	19/05/2022

केतु-केतु
19/05/2022
15/10/2022

केतु	27/05/2022
शुक्र	21/06/2022
सूर्य	29/06/2022
चंद्र	11/07/2022
मंग	20/07/2022
राहु	11/08/2022
गुरु	31/08/2022
शनि	24/09/2022
बुध	15/10/2022

केतु-शुक्र
15/10/2022
15/12/2023

शुक्र	25/12/2022
सूर्य	15/01/2023
चंद्र	20/02/2023
मंग	16/03/2023
राहु	19/05/2023
गुरु	15/07/2023
शनि	21/09/2023
बुध	20/11/2023
केतु	15/12/2023

केतु-सूर्य
15/12/2023
21/04/2024

सूर्य	21/12/2023
चंद्र	01/01/2024
मंग	08/01/2024
राहु	28/01/2024
गुरु	14/02/2024
शनि	05/03/2024
बुध	23/03/2024
केतु	30/03/2024
शुक्र	21/04/2024

केतु-चंद्र
21/04/2024
20/11/2024

चंद्र	09/05/2024
मंग	21/05/2024
राहु	22/06/2024
गुरु	20/07/2024
शनि	23/08/2024
बुध	22/09/2024
केतु	05/10/2024
शुक्र	09/11/2024
सूर्य	20/11/2024

केतु-मंग
20/11/2024
18/04/2025

मंग	29/11/2024
राहु	21/12/2024
गुरु	10/01/2025
शनि	02/02/2025
बुध	24/02/2025
केतु	04/03/2025
शुक्र	29/03/2025
सूर्य	06/04/2025
चंद्र	18/04/2025

केतु-राहु
18/04/2025
06/05/2026

राहु	14/06/2025
गुरु	05/08/2025
शनि	04/10/2025
बुध	28/11/2025
केतु	20/12/2025
शुक्र	22/02/2026
सूर्य	13/03/2026
चंद्र	14/04/2026
मंग	06/05/2026

केतु-गुरु
06/05/2026
12/04/2027

गुरु	21/06/2026
शनि	14/08/2026
बुध	01/10/2026
केतु	21/10/2026
शुक्र	17/12/2026
सूर्य	03/01/2027
चंद्र	31/01/2027
मंग	20/02/2027
राहु	12/04/2027

केतु-शनि
12/04/2027
21/05/2028

शनि	15/06/2027
बुध	12/08/2027
केतु	04/09/2027
शुक्र	11/11/2027
सूर्य	01/12/2027
चंद्र	04/01/2028
मंग	27/01/2028
राहु	28/03/2028
गुरु	21/05/2028

केतु-बुध
21/05/2028
18/05/2029

बुध	12/07/2028
केतु	02/08/2028
शुक्र	01/10/2028
सूर्य	19/10/2028
चंद्र	18/11/2028
मंग	09/12/2028
राहु	02/02/2029
गुरु	22/03/2029
शनि	18/05/2029

शुक्र-शुक्र
18/05/2029
17/09/2032

शुक्र	07/12/2029
सूर्य	06/02/2030
चंद्र	19/05/2030
मंग	29/07/2030
राहु	27/01/2031
गुरु	09/07/2031
शनि	17/01/2032
बुध	08/07/2032
केतु	17/09/2032

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंग, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चि, धनु
मित्र लग्न	वृश्चि, मेष, मिथु
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	सूर्य मणि, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

शुभ रत्न

जीवन रत्नः	माणिक्य	सन्तति सुख,स्वास्थ्य,
भाग्य रत्नः	मूंगा	स्वास्थ्य,भाग्योदय,सुख
कारक रत्नः	पुखराज	भाग्योदय,सन्तति सुख,दुर्घटना से बचाव

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप/व्रत/दान/लाभ
बुध	माणिक्य	81%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
01/01/2012	मूंगा	74%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
19/05/2022	पुखराज	54%	सुख, धनार्जन, धन
केतु	माणिक्य	77%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
19/05/2022	मूंगा	77%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
18/05/2029	पुखराज	54%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
शुक्र	मूंगा	82%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
18/05/2029	माणिक्य	77%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
18/05/2049	पुखराज	45%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
सूर्य	माणिक्य	94%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
18/05/2049	मूंगा	77%	रविवार,गेहूँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
19/05/2055	पुखराज	49%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, पराक्रम
चन्द्र	मूंगा	82%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
19/05/2055	माणिक्य	76%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
18/05/2065	पुखराज	50%	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च, पराक्रम
मंगल	मूंगा	96%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
18/05/2065	माणिक्य	76%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
18/05/2072	पुखराज	49%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, सुख
राहु	माणिक्य	74%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
18/05/2072	मूंगा	71%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, घी
19/05/2090	पुखराज	54%	सुख, भाग्योदय, सुख
गुरु	मूंगा	77%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
19/05/2090	माणिक्य	76%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
20/05/2106	पुखराज	67%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
शनि	मूंगा	72%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
20/05/2106	माणिक्य	71%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
19/05/2125	पुखराज	50%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, दम्पति

Sample

रत्न धारण

भाग्य रत्न

"रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।"

रत्न	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	ग्रह	नक्षत्र
माणिक्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	सूर्य	कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद
हीरा	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	शुक्र	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	शनि	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
गोमेद	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	राहु	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	केतु	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती के उपाय

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/01/2012-02/11/2014
साढेसाती प्रथम ढैया	21/07/2022-24/03/2025
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती तृतीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/05/2032-06/07/2034

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती प्रथम ढैया	17/02/2052-09/09/2054
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती तृतीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/07/2061-15/02/2064

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2081-09/03/2084
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/03/2084-11/05/2086
साढेसाती तृतीय ढैया	11/05/2086-11/11/2088
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/05/2091-22/06/2093

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि

के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	–	सूर्य, मंग, गुरु
		मारक	–	चंद्र, बुध, शनि
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	–	मंग, सूर्य, राहु
		मारक	–	चंद्र, शुक्र, गुरु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	76%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
चन्द्र	44%	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च
मंगल	83%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, सुख
बुध	54%	सुख, धनार्जन, धन
गुरु	51%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
शुक्र	48%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
शनि	53%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, दम्पति
राहु	60%	सुख, स्वास्थ्य
केतु	58%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
बुध	19/05/2022	69	44	74	89	44	55	45	80	47
केतु	18/05/2029	44	28	85	45	44	71	32	36	91
शुक्र	18/05/2049	44	28	60	58	56	86	71	61	76
सूर्य	19/05/2055	100	65	89	45	73	30	32	36	35
चंद्र	18/05/2065	83	84	60	74	44	42	45	52	35
मंग	18/05/2072	85	53	104	45	73	42	45	48	74
राहु	19/05/2090	44	44	61	77	44	55	57	92	35
गुरु	20/05/2106	85	53	89	33	88	44	45	48	47
शनि	19/05/2125	44	28	47	58	44	67	89	61	35

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम

एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत
2. कुलिक
3. वासुकि
4 शङ्खपाल
5. पद्म
6. महापद्म
7. तक्षक
8. कर्कोटक
9. शङ्खचूड
10. घातक
11. विषधर एवं
12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

_*_

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण देव, योनि गज, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा। यथा- दौलत सिंह आदि

आप में स्वाभाविक रूप से सज्जनता का भाव विद्यमान रहेगा एवं समाज में दूसरे लोगों से आपके प्रिय एवं मधुर संबंध रहेंगे। धन वैभव आदि से आप हमेशा युक्त रहेंगे एवं सुख पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। इन्द्रियों पर आप पूर्ण नियंत्रण रखने में सक्षम रहेंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप नैसर्गिक रूप से ईमानदार रहेंगे एवं अपने इसी गुण से व्यापारादि में धनार्जन करेंगे तथा किसी भी अनैतिक कार्य से धन लाभ प्राप्त नहीं करना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कुशाग्र बुद्धि के पुरूष होंगे एवं बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चारूशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

आप शरीर के सुन्दर सर्वाङ्गों से परिपूर्ण रहेंगे। आप समाज में सभी वर्गो के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शौर्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं पराक्रमी तथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपके इस साहसी स्वभाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप मन से स्वच्छ रहेंगे एवं सबके साथ विश्वास पूर्वक कार्य सम्पन्न करेंगे तथा धोखा किसी के भी साथ नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त धन सम्पति से सुशोभित रहकर समाज में आप एक धनवान पुरूष के रूप में भी यशार्जन करने में सफल रहेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

आपके सभी कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न होंगे एवं अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही सुशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य से भी आप सुशोभित रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

काम भावना की प्रवलता से आप यदा कदा व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके जानुभाग में कोई निशान या चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर होंगे तथा सलाह या मंत्रणा आदि के कार्यों में दक्ष रहेंगे। आप सुशील पत्नी एवं गुणवान पुत्रों से युक्त रहेंगे एवं आपके सभी मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप दृढ विचारों के व्यक्ति होंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर धन सम्पति से आप सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके

लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर आकर्षक शरीर एवं व्यक्तित्व से युक्त रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत एवं नासिका उन्नत होगी। साथ ही आप की कमर भी पतली होगी। शिल्प एवं चित्रकारी में आप निपुण होंगे एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन करने में सफल हो सकेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम होगे तथा वे भी आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। साथ ही वे आपका विरोध करने में हमेशा असमर्थ रहेंगे। आपको विभिन्न शास्त्रों का भी ज्ञान होगा एवं एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। गीत शास्त्र के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसका भी ज्ञान करने में आप उत्सुक रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं निष्ठा का भाव रहेगा एवं नियम पूर्वक आप धर्माचरण में प्रायः तत्पर रहेंगे स्त्री वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। आप हमेशा मधुर एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो की भी आपको प्राप्ति होगी जिसका आप उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे। आप में क्रोध के भाव की अल्पता भी रहेगी एवं राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। आप जमीन के अन्दर से निकाले गए पदार्थो से विशेष रूप से लाभ भी अर्जित करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को उसके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा तथा सभी सामाजिक लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आप की प्रवृति रहेगी एवं इससे आपको प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में यथाशक्ति इसका अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आपको जल या समुद्र से उत्पन्न पदार्थो तथा मोती शंखादि रत्नों से विशेष लाभ प्राप्त होगा तथा इनसे आप युक्त भी हो सकते हैं। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पति भी आपको प्राप्त हो सकेगी तथा सुख पूर्वक आप उसका उपभोग कर सकेंगे। स्त्रियोचित परिधानों के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप शारीरिक रूप से मध्यम कद के पुरूष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगे तथा जल को अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। आपका अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। आप में विद्धता के गुण भी रहेंगे एवं कृतज्ञता के भाव से भी सर्वथा युक्त रहेंगे तथा अन्य मनुष्यों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप भाग्यबल से युक्त पुरूष होंगे तथा आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे इससे आपके लिए अनावश्यक परेशानियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी। आप के अधिकांश कार्य चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे तथा सभी लोग आपके इस गुण से प्रभावित रहेंगे। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे तथा इसके

लिए नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप का मन सर्वदा शुद्ध रहेगा अतः अन्य लोगों से आप कभी भी धोखा नहीं करेंगे तथा शुद्ध मन से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप सामान्यतया उदर पोषण आदि के कार्यों में ही अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। साथ ही यदा कदा लाभमार्ग भी अवरूद्ध होगे। इससे आपको आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा। शारीरिक कान्ति से आप सुशोभित रहेंगे एवं इससे आपके सौन्दर्य आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होगी। पिता से आप पूर्ण रूपेण धन सम्पति प्राप्त करेंगे तथा जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप साहसी एवं पराक्रमी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों को करने में नित्य तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सन्तोषी स्वभाव के व्यक्ति होंगे एवं जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में गम्भीरता का भाव नित्य विद्यमान रहेगा तथा वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रधान पुरूष के रूप में श्रद्धेय तथा सम्माननीय समझे जाएंगे। साथ ही आपका स्वभाव कृपणता से भी युक्त रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप परिवार तथा कुल में भी प्रिय तथा श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथा योग्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे एवं इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगे। शनैः शनैः चलना आपको उचित नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप उत्तम

आचरण के व्यक्ति होंगे तथा आपका आचरण अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेगा। इसके साण ही बन्धु जनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं विद्वता से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं श्रेष्ठ रहेगी जिससे अन्य लोग आपसे नित्य प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप की बुद्धि सरल रहेगी तथा सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से आप सुशोभित रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करने में रूचिशील रहेंगे एवं इसको प्राप्त करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। अन्य लोगों के गुणों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में नित्य समर्थ रहेंगे तथा स्वयं भी उत्तम विद्वानों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के धन ऐश्वर्य एवं वैभव की आपकी पास प्रधानता रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने में नित्य रूचिशील रहेंगे। आप अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे के भी विरूद्ध रहेंगे। इसके

अतिरिक्त आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

गज योनि में जन्म होने के कारण आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के सदैव प्रिय रहेंगे एवं इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर भी प्राप्त करेंगे। इससे आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य सुगमता पूर्वक सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगे। जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। जीवन में आप किसी उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी बन सकते हैं। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं उत्साह पूर्वक कार्य करने से सामान्यतया सफलता प्राप्त करने में सफल रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, व्रजयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज,

पीत वस्त्र, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा समस्त अशुभ फल दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।

मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

भाव फल

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा तथा शरीर में बल की प्रधानता रहेगी। आपके व्यक्तित्व की एक विशेषता यह रहेगी आप एक निडर पुरूष होंगे तथा बिना किसी झिझक के किसी उच्च नेता या अधिकारी से बात करेंगे। आपके स्वर में थोड़ा भारीपन रहेगा तथा गम्भीरता पूर्वक आप अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। भोजन में आप सामान्यतया अल्पाहार ही करेंगे। जीवन में आप स्वपराक्रम से इच्छित भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। शत्रु या विरोधी पक्ष को पराजित करने में आप हमेशा सफल रहेंगे तथा शत्रु की मानहानि करके आपको अत्यंत ही गौरव की अनुभूति होगी। उत्साह के भाव की भी आप में प्रबलता रहेगी तथा सांसारिक महत्व के समस्त कार्यो को उत्साह पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा इनमें पुरूषार्थ से आपको सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। इसके अतिरिक्त प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप हमेशा सफल रहेंगे तथा आपके विरोधी आपसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपकी पुत्र सन्नति भी अल्प ही रहेगी। यथोक्तम्

.ए01ो05.

यदा कदा आपके स्वभाव में उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा तथा क्ररकर्म करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरूष होंगे तथा अपनी बुद्धि पराक्रम एवं कार्य पर पूर्ण भरोसा रखेंगे परन्तु इसी परिपेक्ष्य में आप कभी कभी दूसरों को तुच्छ समझने लगेंगे इससे आपके मान सम्मान तथा छवि में न्यूनता आएगी साथ ही आप अपने से किसी को श्रेष्ठ नहीं समझेंगे। आप एक सिद्धांतवादी पुरूष होंगे तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा करने के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके हृदय में उदारता के भाव की भी प्रधानता रहेगी तथा अन्य लोगों स्नेह तथा सहानुभूति का भी आप समय समय पर प्रदर्शन करते रहेंगे। इससे आपके सामाजिक मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव तथा पराक्रम को स्वीकार करेंगे।

आप अपने गुणों तथा पुरूषार्थ के द्वारा किसी भी कार्य में उन्नति प्राप्त कर सकते है साथ ही आप एक धार्मक पुरूष दानी तथा विश्वास के योग्य भी रहेंगे फलतः आप उच्चाधिकारी या किसी संस्था आदि के अध्यक्ष आदि बन सकते है। आप में नेतृत्व की भी क्षमता रहेगी तथा आपके अनुयायी आपको अपना आश्रयदाता समझकर ईमानदारी से आपकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे। साथ ही धन सम्पति को भी आप अर्जित करेंगे परन्तु नौकर, खानदानी कार्यो या मुकदद्में अथवा विवाद आदि से परेशानी रहेगी अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए। साथ ही यदि आप अन्य योग्य जनों को उचित सम्मान प्रदान कर सकेंगे तो आप एक सम्माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। यथोक्तम्

.छछ. कृशोदरश्चारूपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्प भक्षः।
सुञजातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञचानने सञजनने विलग्ने।।

.ऊछ.

जातकाभरणम्

अर्थात् सिंह लग्न का जातक स्वस्थ पराक्रमी भोगी अल्पहारी अल्पयुत युक्त तथा अन्य को अपने समक्ष तुच्छ समझनेवाला होता है।

Sample

भाव फल

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्यमान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

भाव फल

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबधी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमाटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबधियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रूचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

भाव फल

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी माता जी एक भद्र महिला होंगी तथा घर की व्यवस्था करने में वे पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगी। परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में वे कुशल रहेंगी। अतः परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि रहेगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा एवं सभी पारिवारिक जन उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। वे एक परिश्रम शील महिला होगी परन्तु यदा कदा शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगी।

आपके पास सुन्दर आवास स्थल रहेगा तथा घर में रहकर आपको शान्ति की अनुभूति होगी। अपने कार्य क्षेत्र में अत्यधिक व्यस्तता के कारण गृह कार्यो में अल्प मात्रा में ही ध्यान दें सकेंगे। साथ ही आधुनिक भौतिक सुख सुविधाओं से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। यद्यपि आपका आवास स्थल विशेष बड़ा नहीं होगा तथापि सुंदर सजावट से इसकी सुन्दरता तथा आकर्षण दर्शनीय रहेगी तथा सभी भौतिक उपकरण इसमें विद्यमान रहेंगे। लेकिन अपना घर युवास्था में प्राप्त करने में सफल होंगे। आपके पास अपना वाहन रहेगा तथा आयु के साथ साथ इसके स्तर में भी वृद्धि होगी। पैतृक सम्पति से आप युक्त रहेंगे। आप की उच्च शिक्षा, व्यापार प्रबन्ध या विज्ञान के विषयों में रहेगी लेकिन उच्च शिक्षा में कोई व्यवधान भी हो सकता है। आपके लिए तकनीकी शिक्षा उत्तम एवं लाभप्रद रहेगी साथ ही परिश्रम एवं लगन से अपनी शिक्षा को पूर्ण करेंगे। आपको गुप्त धन या अन्तर्प्रज्ञा तथा ज्योतिष संबधी विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी एवं शत्रु को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अन्य जनों की भी समय समय पर सेवा करेंगे।

भाव फल

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रखयाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रखयाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

भाव फल

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी पारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

भाव फल

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुन्दर सुशील तथा अच्छे स्वभाव वाली होगी। साथ ही धर्म के प्रति भी उनकी रूचि रहेगी। सत्य का वे अनुपालन करेंगी एवं आपके प्रति पूर्ण निष्ठावान रहेगी जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे तथा लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे परन्तु प्रौढ़ावस्था में यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। आप स्वभाव से आदर्श प्रेमी होंगे। यद्यपि आप कभी कभी शीघ्र ही उत्तेजित भी हो जाएंगे परन्तु पत्नी के प्रति ईमानदार तथा विश्वासपात्र रहेंगे लेकिन अपने प्रेम का प्रत्यक्ष रूप में प्रदर्शन अल्प मात्रा में ही करेंगे।

समाज में आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा। आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी आपके मित्र वर्ग के प्रति ईर्ष्यालु न हो बल्कि वह ऐसे क्षणों में प्रसन्नता पूर्वक आप लोगों को सहयोग प्रदान करें तथा मन में किसी प्रकार का शक अथवा भ्रान्ति न रखे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि रखने में भी आप सफल रहेंगे। बच्चों के प्रति आपका पूर्ण लगाव रहेगा तथा उन से गौरवान्वित होंगे। आप कभी भी किसी अन्य के द्वारा चाहे वह पारिवारिक सदस्य क्यों न हो अपनी पत्नी का अपमान सहन नहीं कर सकते। मेष धनु मिथुन तुला तथा कुम्भ राशि या लग्न के जातक आपके लिए उपयुक्त रहेंगे। अतः आप दाम्पत्य जीवन के लिए इन्हीं से संबध स्थापित करें। व्यवसाय के क्षेत्र में आप किसी संस्था या उद्यम में सम्मानित पद पर कार्यरत हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी पत्नी धार्मिक प्रवृति युक्त, प्रसिद्ध सत्यवादी तथा दयालु स्वभाव की होंगी जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

भाव फल

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्यौतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

भाव फल

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से ह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

भाव फल

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके पिताजी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उनका स्वभाव संवेदनशील रहेगा तथा आनन्द दायक जीवन व्यतीत करना उनको रूचिकर लगेगा। वे एक अच्छे पद पर अपने कार्य क्षेत्र में नियुक्त हो सकते है। साथ ही उनसे आपको पूर्ण स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए किसी प्रतिष्ठित उद्यम में प्रबन्धक,निदेशक या विक्रय प्रबन्धक का पद अनुकूल रहेगा तथा इस क्षेत्र में आपको इच्छित उन्नति एवं सफलताएं प्राप्त होगी। साथ ही व्यापार या सरकारी क्षेत्र में किसी उच्च या सम्मानीय पद भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आपके पास प्रशासनिक क्षमता विद्यमान रहेगी तथा बिना विश्राम किए हुए काफी समय तक कार्य करने में भी सक्षम रहेंगे।

राजनीति के क्षेत्र में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी लेकिन यदि आप राजनीति में प्रवेश करेंगे तो इसमें आप उचित सम्मान ख्याति तथा राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप भौतिक उपकरण निविडा संबधी विभाग ,वीडियो या कम्पूटर आदि के क्षेत्र मेथ भी सफलता को प्राप्त करेंगे। विद्यालय व्यवस्था, आर्थिक क्षेत्र में कृषि भूमि एवं जायदाद तथा वित संस्थाओं से भी आप उचित लाभ अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्वभाव से कार्यशील, सज्जनों पर दयालु, सत्कर्म- कर्ता, ज्ञानवान तथा अच्छे आचरण के व्यक्ति होंगे तथा समाज से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

भाव फल

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

भाव फल

हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

फलादेश - 2012

बृहस्पति का इस वर्ष में गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण होगा। अतः इसके प्रभाव से आप दूर समीप की यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको न्यूनाधिक लाभ की प्राप्ति होगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति इस समय आपके मन में अध्ययन की रुचि भी उत्पन्न हो सकती हैं। पुराने मित्रवर्ग से इस वर्ष आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अवीन नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिनसे भविष्य में आपको लाभ एवं सहयोग की संभावना रहेंगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशाल हृदयता का प्रदर्शन करेंगे। फलतः समाज में भी मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल इस समय अच्छा नहीं रहेगा लेकिन दशा फल शुभ रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में आपको यदा कदा न्यूनता दृष्टिगोचर होगी परन्तु अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष से आप शुभ फल अर्जित कर सकेंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना प ड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के

प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

Sample

फलादेश - 2013

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति का भ्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतःयह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर स्नेहपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष आपकी विगत सोचे हुए योजनाएँ तथा महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में भी इस समय आपकी उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। साथ ही समाज से आपको यथोचित मान सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप आवास, जायदाद या वाहन संबन्धी सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस वर्ष माता तथा ससुराल से भी लाभ के योग बनेंगे। साथ ही इस वर्ष में आयगोचरफल तथा दशा भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति अष्टम भाव में रहेगी। अतः सामान्य रूप से यह समय आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी इस समय ठीक ही रहेगा तथा दाम्पत्य सुख भी अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस समय पारिवारिक जनों बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे। साथ ही परिश्रम पूर्वक कार्य क्षेत्र की उन्नति भी होती रहेगी ।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभफलदायक रहेंगे अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि आपको प्राप्त होगी। लेकिन शनि की दशा का भी न्यूनाधिक प्रभाव दृष्टि गोचर होगा यद्यपि इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथापि इसको अनुकूल करने के लिए आपको शनि का पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे इसकी शुभता बनी रहेगी।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता

है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

फलादेश - 2014

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचर वश इस वर्ष राहु की स्थिति अष्टम तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी यदा कदा आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि इस समय मध्यम ही रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर मतभेद एवं तनाव रहेगा लेकिन यह अल्पकालीन होगा। आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सामान्य रहेगी तथा

आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही व्यय भी अधिक होगा। इस वर्ष आप कोई विशिष्ट या अचानक लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। लाटरी जुए या सट्टे आदि से भी किंचित लाभ की संभावना रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा तथा सामान्यतया परिश्रम एवं पराक्रम से सफलताएं मिलती रहेंगी।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा तथा आय स्रोतों की वृद्धि में भी विलम्ब होगा। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

फलादेश - 2015

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

गोचरवश इस वर्ष में शनि नवम भाव में संक्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा मैं वृद्धि होगी तथा एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही धर्म एवं धार्मिक कृत्यों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक आप इनको करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं इच्छित मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति वर्ष भर होती रहेगी। परन्तु पिता का स्वास्थ्य इस समय अच्छानहीं रहेगा तथा शारीरकि रूप से वे परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं।इसके अतिरिक्त आय गोचर फल इस समय अशुभ रहेंगे। परन्तु दशाफल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः यदा कदा आपको मानसिक या अन्य परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु सामान्य समय अच्छा ही व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु सप्तम तथा केतु की स्थिति राशि पर रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आपको मानसिक अशान्ति एवं असन्तुष्टि का सामना करना पड़ेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता प्राप्त होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय पत्नी का स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं परस्पर संबंध भी मध्यम रहेंगे। साथ ही व्यापार या कार्य क्षेत्र में साझेदार या सहयोगियों से भी कोई समस्या हो सकती है। अतः सतर्क रहना चाहिए। इस समय सामाजिक मान प्रतिष

Sample

ठा भी सामान्य रहेगी तथा आर्थिक दृष्टि से भी आपका अत्यधिक परिश्रम के उपरांत ही आवश्यक धनार्जन होगा लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। फलतः वर्ष सामान्य रहेगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ एवं दशा मध्यम रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों में परिश्रम पूर्वक सफलता मिलेगी तथा अन्यत्र भी समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः शुभ फलों की वृद्धि तथा अशुभ फलों में कमी करने के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

फलादेश - 2016

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष में शनि नवम भाव में संक्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा मैं वृद्धि होगी तथा एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही धर्म एवं धार्मिक कृत्यों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक आप इनको करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं इच्छित मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति वर्ष भर होती रहेगी। परन्तु पिता का स्वास्थ्य इस समय अच्छानहीं रहेगा तथा शारीरकि रूप से वे परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं।इसके अतिरिक्त आय गोचर फल इस समय अशुभ रहेंगे। परन्तु दशाफल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः यदा कदा आपको मानसिक या अन्य परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु सामान्य समय अच्छा ही व्यतीत होगा।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतःइस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकददमे आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती

हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।